International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in June 2024, ISSN -2393-8048

मानव विकास में खाद्य निगम की भूमिका

नवीन उपवेजा, शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर
डॉ0 धीरज कुमार यादव, सहायक आचार्य (भूगोल विभाग), टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर

शोध सारांश

मानव विकास किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण सूचक माना जाता है। इसका संबंध केवल आर्थिक वृद्धि से नहीं बल्कि व्यक्ति के स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, जीवन स्तर, सामाजिक सुरक्षा तथा अवसरों की उपलब्धता से भी होता है। जब किसी देश के नागरिकों को पर्याप्त भोजन, स्वास्थ्य सेवाएँ, शिक्षा और सम्मानजनक जीवन प्राप्त होता है, तभी वास्तविक मानव विकास संभव हो पाता है। इन सभी घटकों में खाद्य सुरक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि भोजन मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। यदि व्यक्ति को पर्याप्त एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध नहीं होगा तो उसका शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास बाधित होगा।

भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में खाद्यान्न की उपलब्धता, भंडारण तथा वितरण की व्यवस्था को सुचारु बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत को खाद्यान्न संकट, अकाल, गरीबी और भूख जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा। इन परिस्थितियों में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु भारतीय खाद्य निगम की स्थापना वर्ष 1965 में की गई। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य किसानों से उचित मूल्य पर खाद्यान्न खरीदना, उसका सुरक्षित भंडारण करना तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से जरूरतमंद लोगों तक पहुँचाना है।

भारतीय खाद्य निगम ने देश में खाद्य सुरक्षा को मजबूत बनाने, किसानों को आर्थिक संरक्षण देने तथा गरीब वर्गों तक खाद्यान्न पहुँचाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। इसके माध्यम से लाखों किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य प्राप्त हुआ तथा करोड़ों लोगों को सस्ती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध कराया गया। इससे कुपोषण, भूख तथा खाद्य असुरक्षा को कम करने में सहायता मिली है।

मानव विकास के विभिन्न आयामों जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, सामाजिक न्याय तथा आर्थिक सुरक्षा पर खाद्य निगम का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। यह संस्था न केवल खाद्यान्न प्रबंधन का कार्य करती है बल्कि मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। प्रस्तुत शोध–पत्र में मानव विकास के संदर्भ में खाद्य निगम की भूमिका का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

शोध की प्रस्तावना

मानव विकास की अवधारणा आधुनिक विकास चिंतन का एक महत्वपूर्ण भाग है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रतिपादित मानव विकास की संकल्पना के अनुसार विकास का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य की क्षमताओं और अवसरों का विस्तार करना है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वस्थ जीवन जीने, शिक्षा प्राप्त करने तथा सम्मानजनक जीवन स्तर हासिल करने का अवसर मिलना चाहिए। मानव विकास का आधार मानव कल्याण है और मानव कल्याण का आधार खाद्य सुरक्षा है।

भोजन मनुष्य के अस्तित्व की मूलभूत आवश्यकता है। पर्याप्त भोजन के बिना न तो व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है और न ही अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास कर सकता है। भोजन की कमी से कुपोषण, रोग, मृत्यु दर तथा सामाजिक असमानताएँ बढ़ती हैं। इसलिए किसी भी राष्ट्र की विकास नीति में खाद्य सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है।

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय खाद्यान्न उत्पादन बहुत कम था तथा देश को विदेशी सहायता पर निर्भर रहना पड़ता था। बढ़ती जनसंख्या और सीमित कृषि संसाधनों के कारण खाद्यान्न संकट लगातार गंभीर होता जा रहा था। इस समस्या के समाधान हेतु सरकार ने हरित क्रांति को प्रोत्साहित किया तथा खाद्यान्न प्रबंधन के लिए भारतीय खाद्य निगम की स्थापना की।

भारतीय खाद्य निगम का प्रमुख कार्य किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खाद्यान्न खरीदना, उसका वैज्ञानिक भंडारण करना तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से उसका वितरण करना है। यह संस्था देश में खाद्यान्न के संतुलन को बनाए रखने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में केंद्रीय भूमिका निभाती है।

मानव विकास की दृष्टि से खाद्य निगम का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह समाज के कमजोर वर्गों तक खाद्यान्न पहुँचाने का कार्य करता है। गरीब, श्रमिक, भूमिहीन, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य वंचित वर्गों को खाद्यान्न उपलब्ध कराकर यह सामाजिक समानता और समावेशी विकास को बढ़ावा देता है।

आज भारत विश्व के प्रमुख खाद्यान्न उत्पादक देशों में शामिल है। इस उपलब्धि के पीछे किसानों की मेहनत के साथ–साथ भारतीय खाद्य निगम की प्रभावी भूमिका भी रही है। अतः मानव विकास के संदर्भ में खाद्य निगम की भूमिका का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मानव विकास में खाद्य निगम की भूमिका

भारतीय खाद्य निगम मानव विकास की प्रक्रिया में अनेक स्तरों पर योगदान देता है। इसका पहला और सबसे महत्वपूर्ण योगदान खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना है। जब किसी व्यक्ति को नियमित रूप से पर्याप्त भोजन उपलब्ध होता है, तब उसका स्वास्थ्य बेहतर रहता है और वह सामाजिक तथा आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग ले सकता है। खाद्य निगम देशभर में खाद्यान्न की उपलब्धता बनाए रखकर इस उद्देश्य की पूर्ति करता है।

दूसरा महत्वपूर्ण योगदान किसानों की आर्थिक सुरक्षा से संबंधित है। खाद्य निगम किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूँ और धान की खरीद करता है। इससे किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य प्राप्त होता है तथा उन्हें बाजार की अनिश्चितताओं से सुरक्षा मिलती है। किसानों की आय में वृद्धि ग्रामीण विकास को गति देती है और मानव विकास के आर्थिक आयाम को सुदृढ़ बनाती है।

तीसरा योगदान पोषण स्तर में सुधार के रूप में देखा जा सकता है। पर्याप्त खाद्यान्न उपलब्ध होने से बच्चों, महिलाओं तथा वृद्धों को बेहतर पोषण मिलता है। पोषण स्तर में सुधार से रोगों की संभावना कम होती है तथा शारीरिक और मानसिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

चौथा योगदान शिक्षा के क्षेत्र में दिखाई देता है। जब गरीब परिवारों को सस्ती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध होता है, तब उनकी आय का कुछ हिस्सा शिक्षा पर व्यय किया जा सकता है। इससे बच्चों की विद्यालयों में उपस्थिति बढ़ती है तथा शिक्षा का स्तर सुधरता है।

पाँचवाँ योगदान सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय की स्थापना में है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से गरीब एवं कमजोर वर्गों को खाद्यान्न उपलब्ध कराकर खाद्य निगम सामाजिक असमानताओं को कम करने का प्रयास करता है। यह व्यवस्था समावेशी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

छठा योगदान राष्ट्रीय आपदाओं और संकटों के समय देखने को मिलता है। कोविड–19 महामारी, बाढ़, सूखा तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं के दौरान खाद्य निगम द्वारा संग्रहीत खाद्यान्न करोड़ों लोगों के लिए जीवनरक्षक सिद्ध हुआ। इससे समाज में स्थिरता और सुरक्षा बनी रही।

शोध कुंजी

मानव विकास, खाद्य सुरक्षा, भारतीय खाद्य निगम, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, न्यूनतम समर्थन मूल्य, खाद्यान्न भंडारण, पोषण, गरीबी उन्मूलन, सामाजिक न्याय, कृषि विकास, समावेशी विकास, खाद्य प्रबंधन।

शोध के सोपान

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। शोध सामग्री के संकलन के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। विभिन्न पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, आर्थिक सर्वेक्षणों, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के प्रकाशनों तथा भारतीय खाद्य निगम के आधिकारिक दस्तावेजों का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के प्रथम चरण में मानव विकास की अवधारणा का सैद्धांतिक विश्लेषण किया गया। इसके पश्चात भारतीय खाद्य निगम की संरचना, उद्देश्यों तथा कार्यप्रणाली का अध्ययन किया गया। तीसरे चरण में खाद्य सुरक्षा, पोषण, कृषि विकास तथा सामाजिक कल्याण पर खाद्य निगम के प्रभाव का विश्लेषण किया गया। शोध में उपलब्ध आँकड़ों तथा साहित्य के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। विभिन्न योजनाओं, नीतियों तथा कार्यक्रमों के माध्यम से खाद्य निगम की भूमिका का मूल्यांकन किया गया है। अंततः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर मानव विकास में खाद्य निगम के योगदान का समग्र आकलन प्रस्तुत किया गया है।

शोध के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. मानव विकास की अवधारणा का अध्ययन करना।
2. भारतीय खाद्य निगम की स्थापना एवं कार्यप्रणाली को समझना।
3. खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में खाद्य निगम की भूमिका का विश्लेषण करना।
4. पोषण एवं स्वास्थ्य सुधार में खाद्य निगम के योगदान का अध्ययन करना।
5. किसानों की आर्थिक सुरक्षा में खाद्य निगम की भूमिका का मूल्यांकन करना।

6. सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से सामाजिक न्याय की स्थापना में खाद्य निगम के योगदान का परीक्षण करना।
7. मानव विकास के विभिन्न आयामों पर खाद्य निगम के प्रभाव का अध्ययन करना।
8. खाद्य निगम की चुनौतियों एवं संभावित सुधारों का विश्लेषण करना।

शोध का महत्व

भारतीय खाद्य निगम का महत्व केवल खाद्यान्न प्रबंधन तक सीमित नहीं है। यह संस्था राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा व्यवस्था की आधारशिला है। इसके माध्यम से देश में खाद्यान्न का संतुलित वितरण सुनिश्चित होता है तथा गरीब वर्गों को भोजन की उपलब्धता बनी रहती है।

यह संस्था कृषि क्षेत्र को स्थिरता प्रदान करती है। किसानों को उचित मूल्य मिलने से कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है। इससे राष्ट्रीय आय, ग्रामीण रोजगार तथा आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

खाद्य निगम का महत्व सामाजिक कल्याण की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। गरीबों को सस्ता खाद्यान्न उपलब्ध कराकर यह भूख और कुपोषण जैसी समस्याओं को कम करने में सहायता करता है। यह मानव विकास के स्वास्थ्य और पोषण संबंधी आयामों को मजबूत बनाता है।

महिलाओं और बच्चों के विकास में भी खाद्य निगम का योगदान उल्लेखनीय है। पर्याप्त खाद्यान्न उपलब्ध होने से मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार होता है। इससे भविष्य की पीढ़ियों का विकास अधिक स्वस्थ और सक्षम रूप में होता है।

इसके अतिरिक्त खाद्य निगम सामाजिक स्थिरता बनाए रखने में भी सहायक है। खाद्यान्न की उपलब्धता समाज में असंतोष और संकट की स्थितियों को कम करती है तथा राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा को मजबूत बनाती है।

शोध का निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय खाद्य निगम मानव विकास के विभिन्न आयामों में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह संस्था केवल खाद्यान्न खरीद और वितरण तक सीमित नहीं है बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा, पोषण स्तर, कृषि विकास, सामाजिक न्याय तथा आर्थिक स्थिरता की आधारशिला के रूप में कार्य करती है।

खाद्य निगम किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान कर उनकी आय को सुरक्षित करता है तथा कृषि उत्पादन को प्रोत्साहित करता है। दूसरी ओर सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से गरीब एवं कमजोर वर्गों को सस्ती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध कराकर भूख और कुपोषण को कम करने में सहायता करता है।

मानव विकास के स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण तथा जीवन स्तर संबंधी सभी प्रमुख आयामों पर खाद्य निगम का सकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है। विशेष रूप से आपदा और संकट की परिस्थितियों में इसकी भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

यद्यपि भंडारण क्षमता की कमी, परिवहन संबंधी समस्याएँ, खाद्यान्न की बर्बादी तथा वित्तीय भार जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं, फिर भी भारतीय खाद्य निगम देश की खाद्य सुरक्षा व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ बना हुआ है। आधुनिक तकनीकों, डिजिटल निगरानी तथा बेहतर प्रबंधन के माध्यम से इसकी कार्यक्षमता को और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

अंततः कहा जा सकता है कि मानव विकास की प्रक्रिया में भारतीय खाद्य निगम का योगदान अत्यंत व्यापक, बहुआयामी और दीर्घकालिक है। एक स्वस्थ, शिक्षित, पोषित और आत्मनिर्भर समाज के निर्माण में इसकी भूमिका भविष्य में भी अत्यंत महत्वपूर्ण बनी रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. "अहमत, एस." (2021), "भारतीय खाद्य निगम में मानव संसाधन प्रबंधनः एक तुलनात्मक अध्ययन", 'प्रबंधन और नीति पत्रिका', 15(4), 112–125
2. "दवे, म." (2022), "वित्तीय प्रबंधन और मानव संसाधनः भारतीय खाद्य निगम के संदर्भ में", 'आर्थिक अनुसंधान जर्नल', 10(1), 34–48।
3. "कुलकर्णी, य." (2020), "मानव संसाधन प्रबंधन में नवाचार और चुनौतियाँ", 'प्रबंधकीय अध्ययन', 14(2), 65–80।
4. "मिश्रा, क." (2022), "भारतीय खाद्य निगम में मानव संसाधन प्रबंधन की भूमिका", 'प्रबंधन और विकास जर्नल', 13(2), 90–105।
5. "रावत, ल." (2021), "वित्तीय प्रबंधन और मानव संसाधन प्रबंधन के अंतर्संबंधः भारतीय खाद्य निगम का अध्ययन", 'वित्तीय अध्ययन पत्रिका', 7(4), 50–63।